रमकेरिया के बिहाव

कहानीः डाईट अंबिकापुर द्वारा निर्मित
चित्रांकनः दीपा शाक्य

Copyright © Language and Learning Foundation 2019
All rights reserved.

रमकेरिया के बिहाव, भांटा के संग माढ़गे।

संझा बेरा सब्बोझन एक जघा सकलइन।

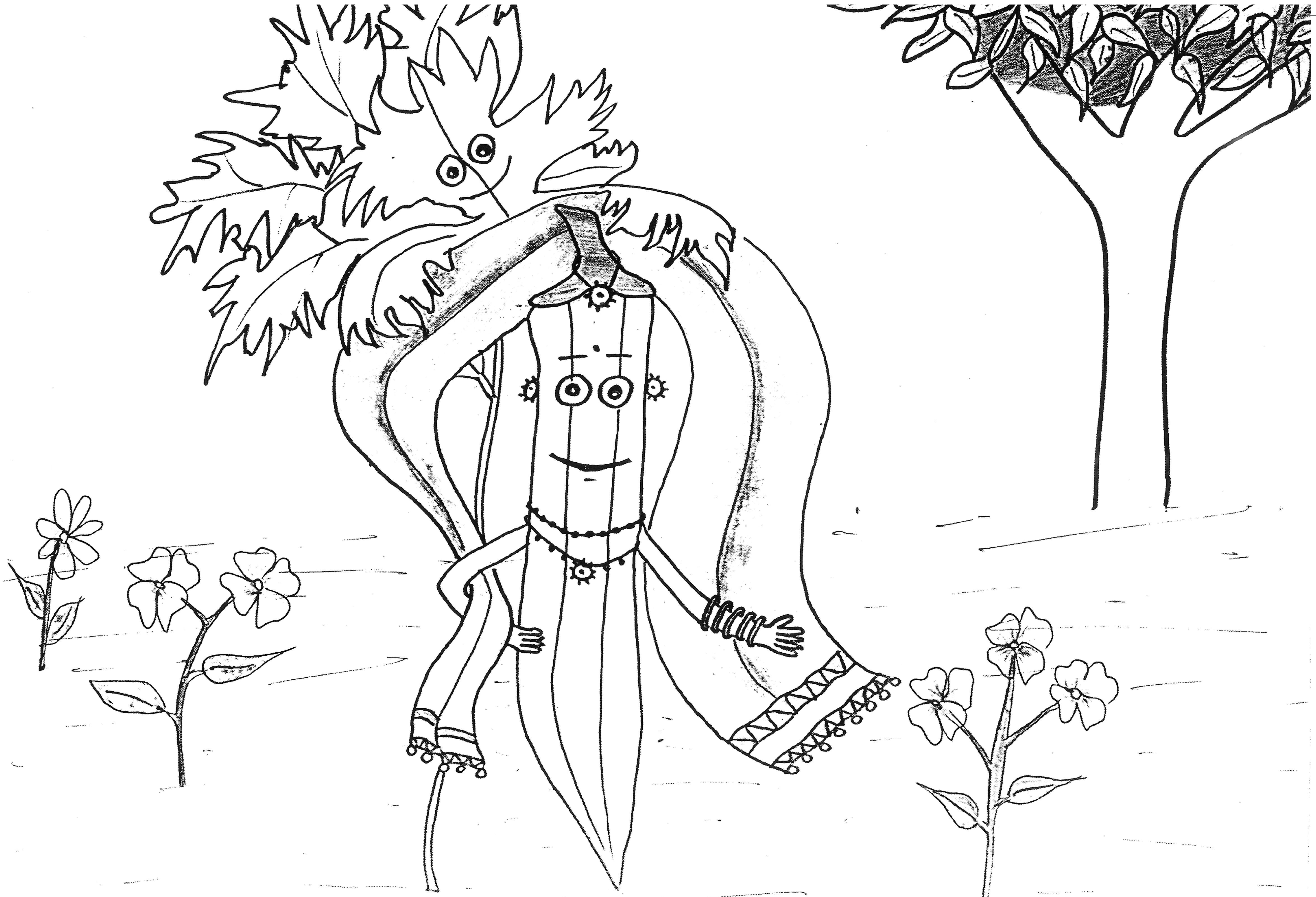

रमकेरिया ल धनिया ह अब्बड़ सम्हराईस।

बरात म आलू, पताल, मुनगा अउ करेला नाचत गावत आईन।

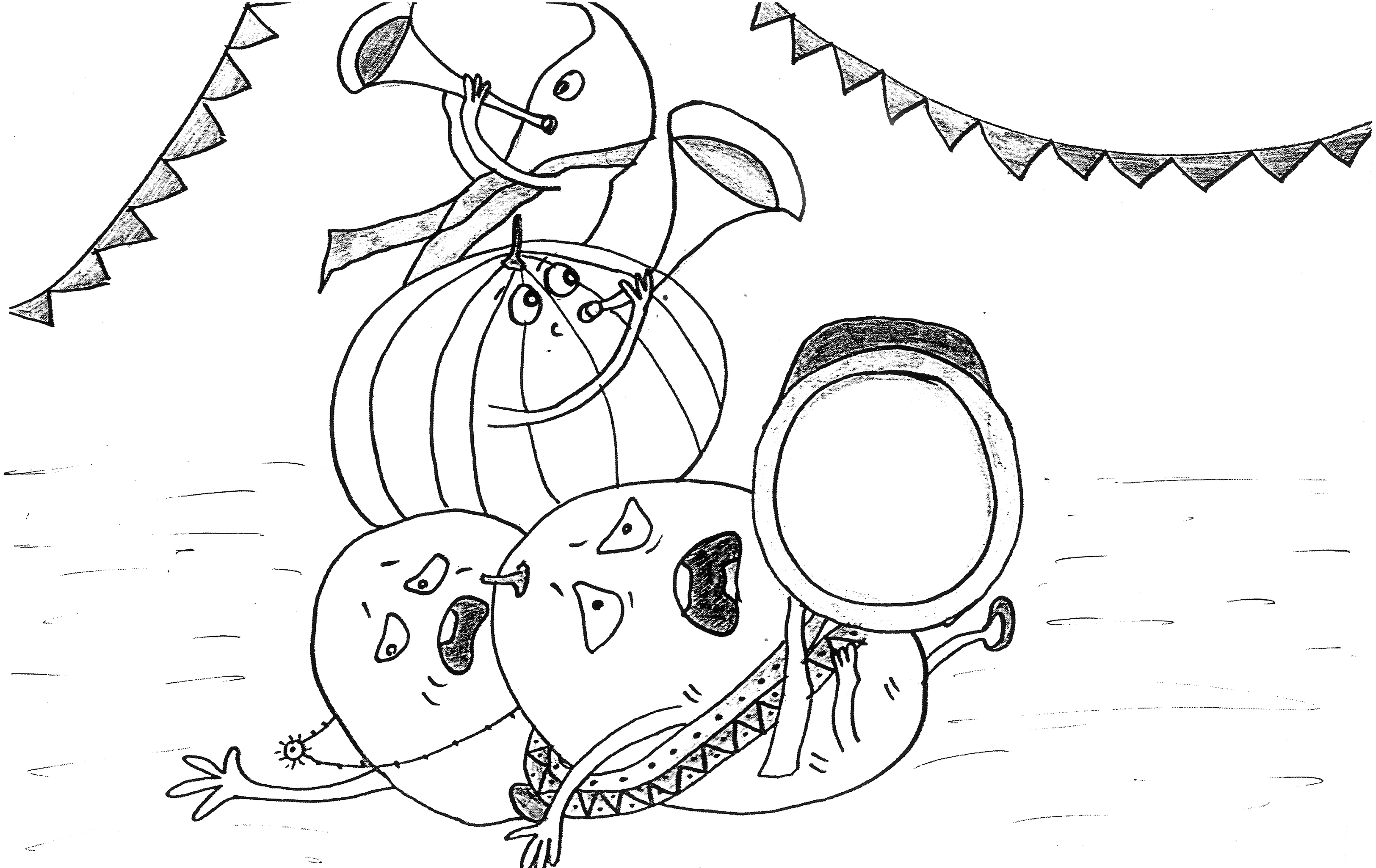

कोंहड़ा ह ढोलक बजावत-बजावत आलू उपर गिर परिस। आलू कहिस उई... उई...।

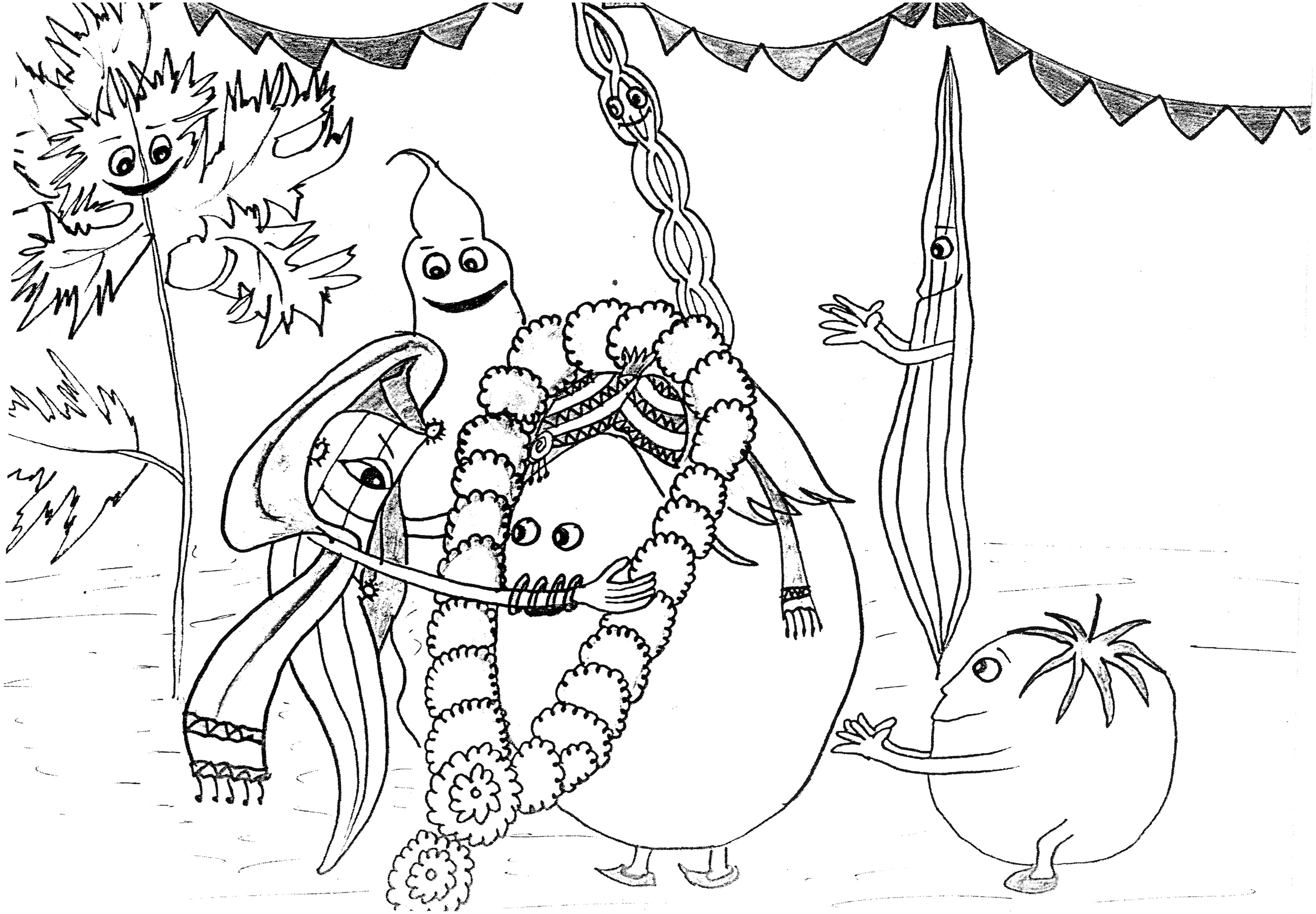

रमकेरिया लजावत-लजावत भांटा के घेंच म माला पहिराईस।

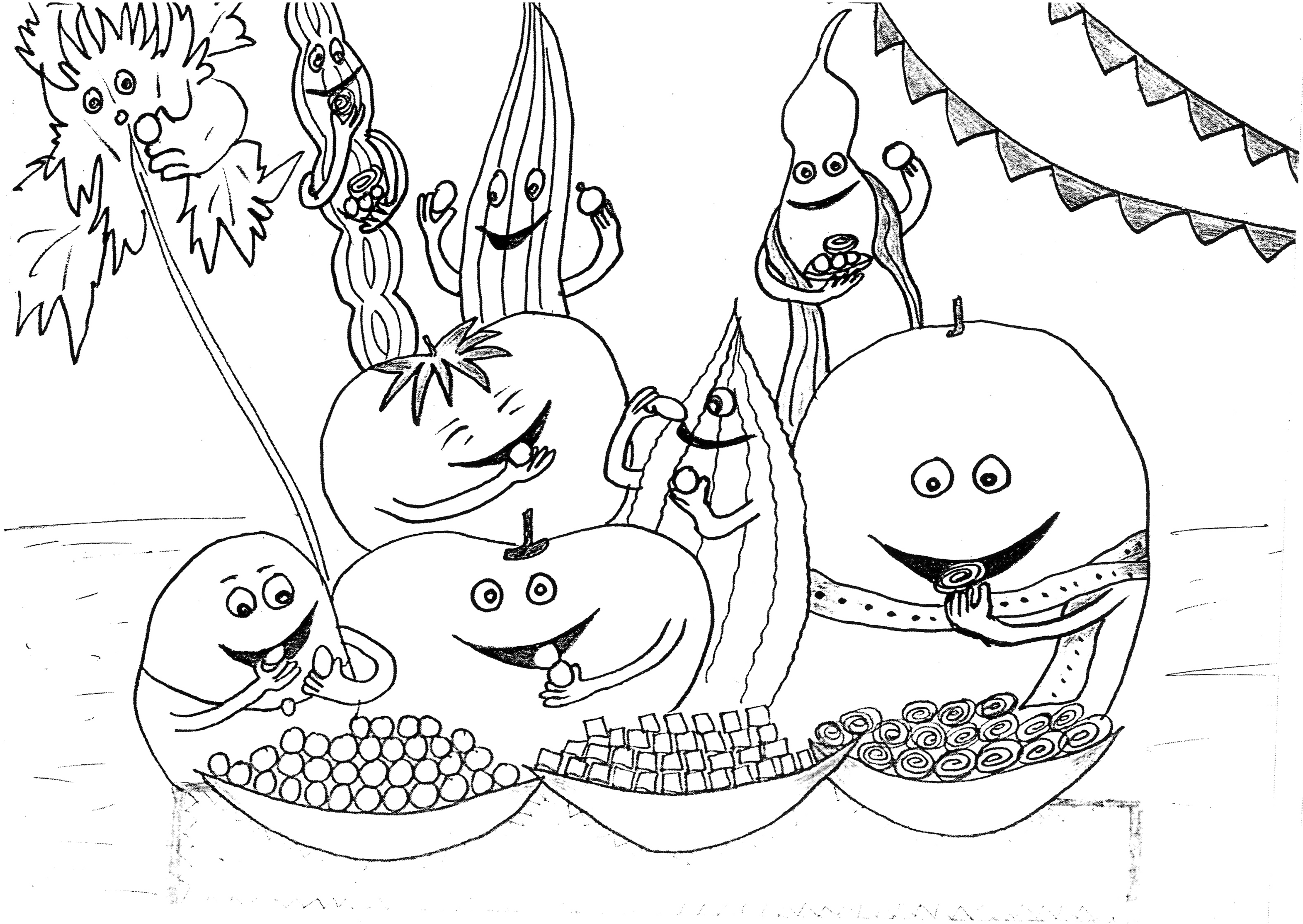

सब्बोझन जलेबी, बरफी खाईन।

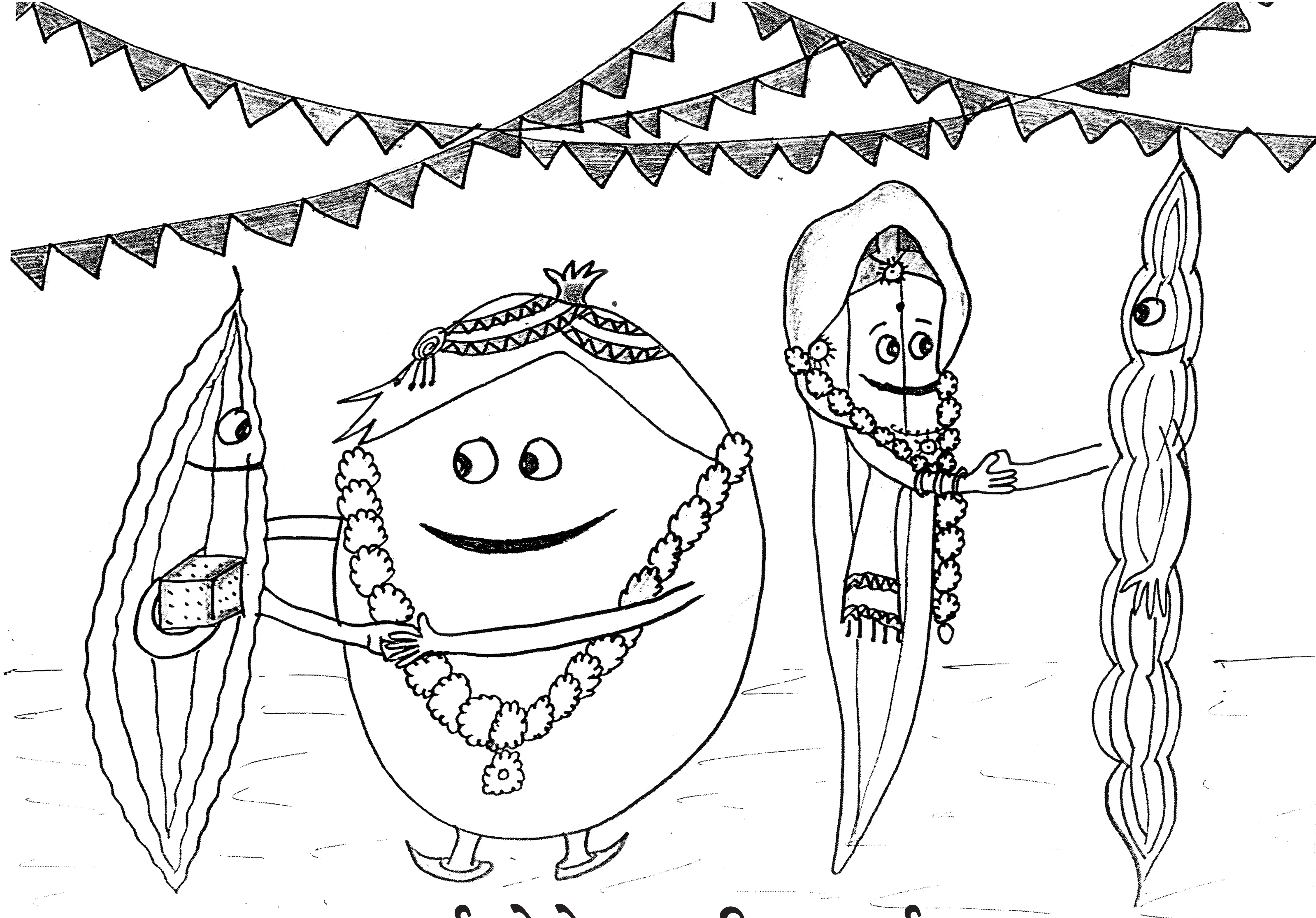

बधई देके खुशी मनाईन।

रमकेरिया के बिहाव

रमकेरिया के बिहाव, भांटा के संग माढ़गे। संझा बेरा सब्बोझन एक जघा सकलइन। रमकेरिया ल धनिया ह अब्बड़ सम्हराईस। बरात म आलू, पताल, मुनगा अउ करेला नाचत गावत आईन। कोंहड़ा ह ढोलक बजावत-बजावत आलू उपर गिर परिस। आलू कहिस उई... उई...। रमकेरिया लजावत-लजावत भांटा के घेंच म माला पहिराईस। सब्बोझन जलेबी, बरफी खाईन। बधई देके खुशी मनाईन।

भिंडी की शादी

भिंडी की शादी भटा के साथ तय हो गयी। शाम को सब एक जगह इक्कट्ठे हुए। भिंडी को धनिया ने खूब सजाया। बारात में आलू, टमाटर, मुनगा, करेला नाचते गाते आए। कद्दू ढोल बजाते-बजाते आलू पर गिरा। आलू बोला... उई... ई... ई...। भिंडी ने शरमाते हुए भटा के गले में माला डाली। सब ने जलेबी, बरफी खाई। बधाई देकर खुशी मनाई।

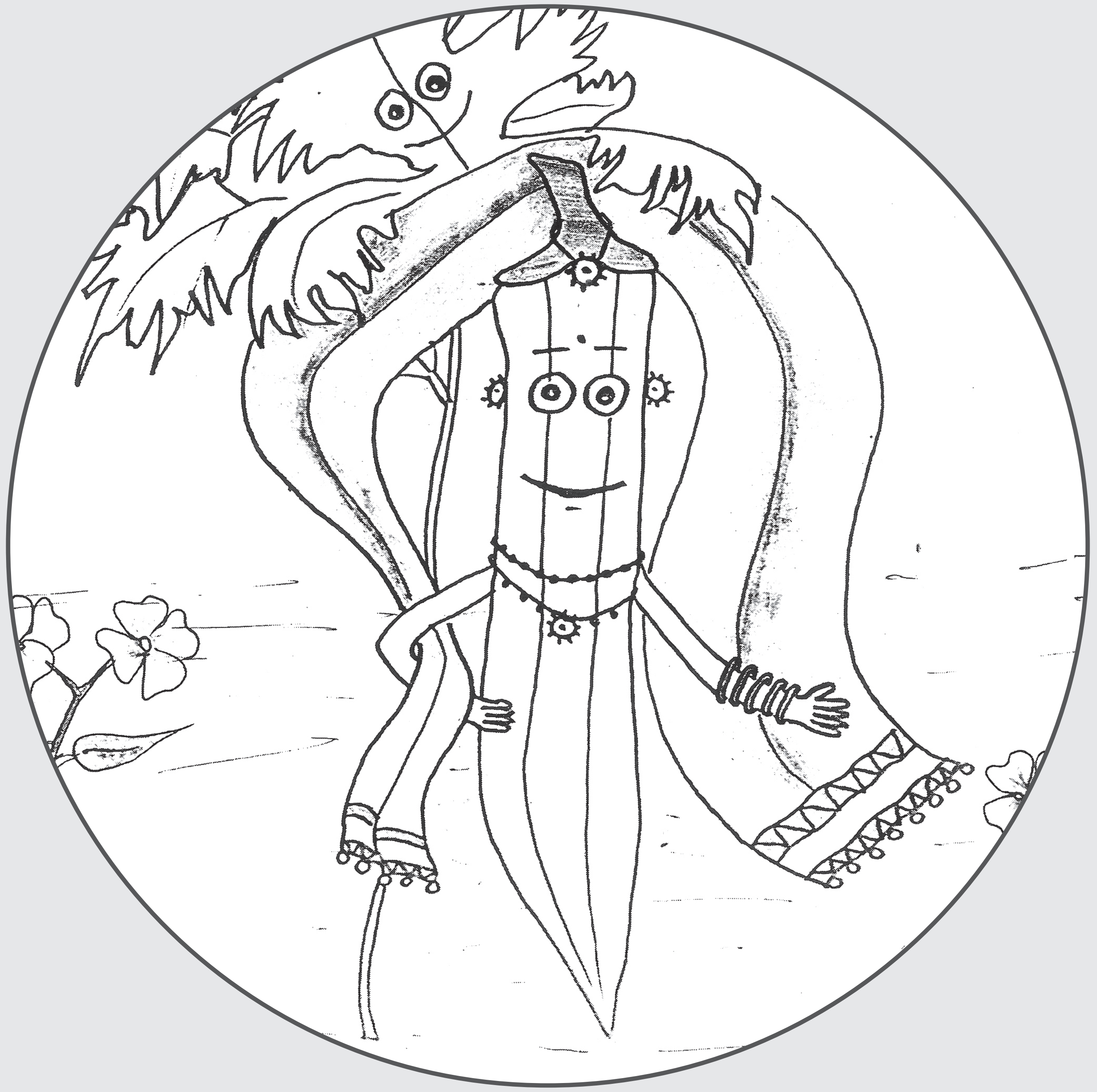

Designed by www.stelladesignandprint.com

LLF Language and Learning foundation

शिक्षा का अधिकार
सब पढ़ें सब बढ़ें